पूजा अग्निहोत्री

खाकी

राजवीर की आँखें बचपन से ही खाकी देखकर चमक उठती थीं। उनके पिता कभी अखाड़े के दंगलों में नाम कमाने वाले पहलवान थे। चौड़े कंधे, गठीला शरीर और मल्लयुद्ध की चमक उनके चेहरे पर हमेशा रहती। गाँव में लोग उन्हें सिर्फ ताक़तवर पहलवान ही नहीं, बल्कि निडर इंसान मानते थे। एक दिन किसी रसूखदार ने उनकी काया और पराक्रम देखकर उन्हें पुलिस विभाग में भर्ती करवा दिया। पुलिस की नौकरी उन्हें मिली तो सही, लेकिन उनकी आत्मा तो अखाड़े में ही अटकी रही। थाने का काम चाहे जो हो, वे ज़्यादातर समय कुश्ती के अभ्यास या प्रतियोगिताओं की तैयारी में लगे रहते।

राजवीर ने बचपन में सबसे पहले अपने पिता पर खाकी देखी। वह खाकी उनके लिए किसी देववस्त्र से कम न थी। पिता जब वर्दी पहनकर निकलते, तो गाँव वाले सलाम ठोकते। उस छवि ने राजवीर के मन में खाकी के लिए गहरा मोह पैदा कर दिया। समय बीता, बड़े भाई ने भी पुलिस की वर्दी पहनी। और फिर जब राजवीर खुद सब-इंस्पेक्टर के पद पर चयनित हुए, तो लगा मानो परिवार की दूसरी पीढ़ी में खाकी ने अपनी जगह बना ली हो।

ट्रेनिंग ने राजवीर को सिखाया कि पुलिस सिर्फ नौकरी नहीं, बल्कि एक जीवन है— चौकसी, त्याग और अनुशासन से भरा जीवन। उन्होंने यह बात दिल में उतार ली। वर्दी पहनने के बाद उन्हें लगता कि वह अब किसी और ही सत्ता के प्रतिनिधि हैं, जिसके कंधों पर समाज की सुरक्षा टिकी है।

ट्रेनिंग पूरी होते ही उनका विवाह लता से हुआ। लता पढ़ी-लिखी, समझदार और आत्मनिर्भर सोच रखने वाली युवती थी। विवाह के बाद उसने नौकरी करने की इच्छा जताई, लेकिन राजवीर ने बड़ी नरमी से कहा— "लता, जितना सरकार हमें वेतन देती है, उतना घर चलाने और तुम्हारी इच्छाएँ पूरी करने के लिए काफी है। तुम्हें नौकरी करने की ज़रूरत नहीं।"

उस दिन से मानो एक मूक समझौता हो गया। आर्थिक बोझ राजवीर संभालेंगे और घर-परिवार की ज़िम्मेदारी लता पर होगी।

लता कुशल गृहिणी साबित हुई। वह राजवीर का हर तरह से ख्याल रखती। मगर कई बार उसे हैरानी होती जब वह देखती कि राजवीर वर्दी पहने-पहने ही बिस्तर पर सो गए। उसने एक दिन पूछा— "राज! वर्दी उतारकर आराम से कपड़े पहन लो। नींद अच्छी आएगी।"

राजवीर मुस्कराकर बोले— "लता, तुम्हारे पति पुलिस में सब-इंस्पेक्टर हैं। अपराधी यह देखकर थोड़े रुकेंगे कि मैं पाजामा पहनकर सो रहा हूँ। न जाने कब फोन आ जाए— किसी जगह मर्डर हुआ है, कहीं आतंकी घुस आए हैं, या किसी जुलूस-मेले में हमला हुआ है। ऐसे वक्त पर वर्दी ही असली हथियार है।"

लता को तब समझ आया कि यह नौकरी सिर्फ आठ घंटे की ड्यूटी नहीं, बल्कि चौंबीसों घंटे का पहरा है।

कुछ साल बीते, बेटा हुआ, खर्च बढ़ने लगे। लता ने फिर नौकरी करने की इच्छा जताई, लेकिन इस बार राजवीर ने गंभीर स्वर में कहा—"देखो लता, इस नौकरी में लोग ऊपर की कमाई खूब करते हैं। लेकिन मैं कभी भी उस रास्ते पर नहीं जाऊँगा। तुम मुझसे यह उम्मीद मत रखना। जितना वेतन है, उसी में गुज़ारा करना होगा। थोड़ा मैनेजमेंट सीख लो। बार-बार चीज़ें खरीदने का जूनून छोड़ दो।"

लता चुप हो गई। वह जानती थी कि उसके पति अलग मिट्टी के बने हैं। वह देखती कि अक्सर तबादले के वक्त लोग रिश्वत देकर आराम की पोस्टिंग पाते, मगर राजवीर सामान वहीं छोड़कर नई जगह चले जाते।

राजवीर की ईमानदारी सबको चौंकाती थी। लोग कहते थे—"पुलिस में औरतों का शोषण होता है।" लेकिन राजवीर हर महिला कॉन्स्टेबल को "बेटी" कहकर संबोधित करते। कई बार उनकी जूनियर लड़कियों ने उन्हें रिझाने की कोशिश की, पर वे हंसकर टाल देते और समझाते—
"नौकरी में प्रमोशन मेहनत से पाना चाहिए, शरीर बेचकर नहीं।"

एक बार लता मायके गई हुई थी। राजवीर ऐसे मौकों पर टिफ़िन सेवा मंगाकर काम चला लेते। रात को गहरी नींद में थे कि अचानक फोन बजा। टीआई की आवाज़ आई—"राजवीर! बड़ा मर्डर हुआ है। लड़की रसूखदार की बेटी है। प्रेमी ने ही हत्या की है और फरार है। ऊपर से दबाव है। तुरंत तीन लोगों की टीम बनाओ और निकल पड़ो।"

राजवीर ने दो साथी लिए और पीछा शुरू किया। अपराधी बार-बार जगह बदल रहा था। कभी शहर, कभी कस्बा, कभी जंगल। सात सौ किलोमीटर तक पीछा चलता रहा। एक जगह मुठभेड़ हुई, गोलियाँ चलीं। अपराधी बचकर निकल गया, लेकिन राजवीर ने हिम्मत नहीं हारी। उन्होंने खाकी की कसम खाई थी कि अपराधी छूटना नहीं चाहिए।

आखिरकार अपराधी ने दबाव में आकर एक थाने में आत्मसमर्पण कर दिया। खबर मिलते ही टीआई ने चैन की साँस ली और राजवीर की पीठ थपथपाई। उसके बाद जब भी उनका तबादला आदेश आता, टीआई उन्हें रिलीव ही नहीं करता—"यह आदमी तो इस जिले की जरूरत है।"

राजवीर जितने सख्त थे, उतने ही दयालु भी। किसी अपराधी को पकड़ते तो सबसे पहले पूछते— "सिर्फ नशा किया है या कुछ खाया भी है?" अगर वह कहता कि कुछ नहीं खाया, तो अपनी जेब से उसे खाना खरीदकर खिलाते।

कभी कोई दुकानदार खाकी देखकर पैसे लेने से मना कर देता तो तुरंत टोकते—"ऐसा मत करो। अगली बार तुम्हारी दुकान पर आना ही बंद कर दूँगा।"

राजवीर ने खाकी को डर और दबदबे का प्रतीक नहीं, बल्कि इंसानियत का सहारा बना दिया।

लता जानती थी कि उसके पति की नौकरी बेहद जोखिम भरी है। हर बार जब वह किसी मिशन पर जाते, तो उसका दिल डर से

काँप उठता। लेकिन साथ ही उसे गर्व भी होता। वह सोचती— "लोग कहते हैं पुलिस पर भ्रष्टाचार और गुंडागर्दी के दाग हैं। मगर मेरा राजवीर तो अकेले ही उन दागों को धोने में लगा है।"खाकी की यही सच्चाई थी— डर भी, गर्व भी; बोझ भी, जिम्मेदारी भी। और राजवीर ने इसे सिर्फ पहना नहीं, बल्कि जिया।

राजवीर की ज़िंदगी एक निरंतर दौड़ थी— अपराधियों के पीछे, क़ानून के साथ, और अपने ही सिद्धांतों से समझौता न करने की जिद में।

धीरे-धीरे उनका नाम पूरे ज़िले में फैलने लगा। लोग कहते—‘अगर राजवीर केस में हैं तो अपराधी बचेगा नहीं।” लेकिन जैसे-जैसे नाम बढ़ा, वैसे-वैसे दुश्मन भी। अपराधियों के साथ-साथ कुछ अंदरूनी अफ़सर भी उन्हें पसंद नहीं करते थे। वजह साफ़ थी— राजवीर ने कभी ऊपर की कमाई नहीं की, और कई बार बड़े-बड़े लोगों के दबाव को नकार दिया।

एक बार एक बड़े नेता का बेटा शराब के नशे में किसी मजदूर पर गाड़ी चढ़ाकर भाग गया। ऊपर से दबाव आया कि केस दबा दिया जाए। राजवीर ने फाइल में साफ़ लिख दिया ‘अपराध सिद्ध है।” नेता भड़क उठा। "राजवीर, याद रखना, यह खाकी तुम्हें बचाएगी नहीं।"

लेकिन राजवीर मुस्करा दिए— "साहब, खाकी बिकाऊ होती तो शायद मैं भी अमीर होता। लेकिन मैंने इसे माँ समझा है, इसे दागदार नहीं करूँगा।"

लता ने उस दिन पहली बार राजवीर की आँखों में डर की झलक देखी। उसने धीमे स्वर में कहा— "राज, ज़रा संभलकर रहना। बड़े लोग दुश्मनी मोल ले सकते हैं।"

राजवीर ने उसके हाथ थाम लिए— "लता, अगर खाकी की इज़्ज़त बचाते-बचाते मेरी जान भी चली जाए तो मुझे अफ़सोस नहीं होगा।"

कुछ महीनों बाद एक कुख्यात गैंग को पकड़ने की ज़िम्मेदारी भी राजवीर को मिली। गैंग में वही नेता का बेटा भी शामिल था। रात में मुठभेड़ हुई। गोलियाँ चलीं। राजवीर की टीम ने चार अपराधियों को पकड़ लिया, लेकिन गोलीबारी में राजवीर खुद गंभीर रूप से घायल हो गए।

उन्हें अस्पताल ले जाया गया। लता रोती हुई उनके पास पहुँची। राजवीर ने उसकी ओर देखा और धीमी आवाज़ में कहा— "लता... देखो... खाकी पर एक और दाग साफ़ हो गया..."

राजवीर का जीवन एक निरंतर संघर्ष था। ईमानदारी पर अड़े रहना जितना आसान लगता था, असल में उतना ही मुश्किल था। कई बार बड़े अफ़सर और नेता दबाव डालते कि अमुक मामले में लीपापोती कर दो। मगर राजवीर ने हर बार सीधा जवाब दिया—

"साहब, मैं केस का सच छुपा दूँ तो अपराधी बच जाएगा, लेकिन मेरी आत्मा मुझे कभी माफ़ नहीं करेगी।"

एक बार फिर किसी प्रभावशाली का बेटा मानव-तस्करी के केस में पकड़ा गया। ऊपर से सख्त आदेश आया कि रिपोर्ट बदल दो। यहाँ तक कि लालच भी दिया गया—"तुम्हारा प्रमोशन पक्का कर देंगे, बस फाइल से उसका नाम हटा दो।"

राजवीर ने फाइल टेबल पर रखते हुए कहा— "मेरे लिए प्रमोशन से बड़ा प्रमोशन यह है कि मैं आईने में अपना चेहरा देख सकूँ।"

बात रसूखदार तक पहुँची। राजवीर को धमकियाँ मिलने लगीं, लेकिन उनकी साख इतनी मजबूत हो चुकी थी कि उनके थाने के लोग ही ढाल बनकर खड़े हो गए।

उस रात घर लौटे तो लता बोली– "राज, तुम सबको नाराज़ कर लोगे। सोचो तो सही, आगे तुम्हारा करियर रुक भी सकता है।"

राजवीर ने शांत स्वर में कहा– "लता, करियर अगर ईमानदारी की कीमत पर बढ़े तो वह गिरावट है, तरक्की नहींऔर ऐसी गिरावट राजवीर को मंजूर नहीं।"

लता चुप हो गई, लेकिन उसकी आँखों में गर्व छलक आया। उसे समझ आया कि उसके पति केवल खाकी पहनते, बल्कि उसे जीते हैं।

समय बीतता गया। वह रसूखदार विधायक का चुनाव लड़ा और चुनाव हार गया और नए अफ़सरों की पोस्टिंग में वही केस सबसे बड़ी उपलब्धि माना गया, जिसे राजवीर ने दबाव के बावजूद सच लिखा था। विभाग ने भले ही पदक न दिया हो, लेकिन जनता ने उन्हें अपने दिल में जगह दे दी।

गाँव से लेकर शहर तक लोग कहते– "पुलिस में अगर कोई सचमुच खाकी की इज़्ज़त बचा रहा है, तो वह राजवीर है।"

लता अक्सर बेटे से कहती– "देखो, तुम्हारे पिता ने हमें महल नहीं दिया, बड़ी गाड़ियाँ नहीं दीं। लेकिन उन्होंने यह नाम दिया है कि आज भी लोग खाकी को उनके नाम से याद करते हैं। यही सबसे बड़ी पूँजी है।"

राजवीर अब भी जीवित थे, और उनकी खाकी अब भी उतनी ही चमकदार। लेकिन यह चमक डराने की नहीं, भरोसा दिलाने की थी।